उत्तर

HINDI B

Class 10 - हिंदी ब

खंड क - अपठित बोध

1. 1. (क) लोकतंत्र के तीन मुख्य अंग हैं-कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका। चौथा अंग मीडिया को माना जाता है। इसमें दृश्य, श्रव्य व मुद्रित मीडिया होते हैं।
   2. (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   3. (ख) समाचार-पत्र, रेडियो और टी०वी०
   4. लोकतंत्र में मीडिया की अहं भूमिका है। यह कार्यपालिका व विधायिका की समस्याओं, कार्य-प्रणाली तथा विसंगतियों की चर्चा करती है, पर न्यायपालिका पर किसी प्रकार की टिप्पणी करने से बचती है।
   5. न्यायपालिका प्रजातंत्र का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है, परंतु इसकी चर्चा मीडिया में कम होती है, क्योंकि उसमें पारदर्शिता अधिक होती है। दूसरे, न्यायपालिका अपने विशेषाधिकारों के प्रयोग से मीडिया को दबा देती है।
2. 1. (क) पश्चिमी विचारधारा के लोग सह-शिक्षा का समर्थन करते हैं।
   2. (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   3. (घ) सह + शिक्षा
   4. छात्र-छात्राओं में स्पर्धा उत्पन्न करके शिक्षा के बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।
   5. प्रतियोगिता के जोश में विद्यार्थी शानदार सफलताएँ प्राप्त करते हैं।

खंड ख - व्यावहारिक व्याकरण

3. i. डूबता जा रहा था
   ii. सातवीं-आठवीं के कुछ विद्यार्थी
   iii. क्रिया विशेषण पदबंध
   iv. फटती हुई धरती के किनारे
   v. क्रिया पदबंध
4. i. अचानक वामीरो कुछ सचेत होकर घर की तरफ दौड़ पड़ी।
   ii. जो काम एक महीने में पूरा होने वाला था, उसे एक दिन में ही पूरा करने का प्रयास करने लगे।
   iii. अँगीठी सुलगाई और उस पर चायदानी रखी
   iv. वे हरदम किताबें खोलते थे और अध्ययन करते रहते थे।
   v. मैं सफल होने पर कक्षा में प्रथम स्थान पर आया।
5. 'समास' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए -
   (i) समास में दो या अधिक स्वतंत्र शब्द मिलकर नया शब्द बनाते हैं, जबकि यौगिक शब्द किसी एक शब्द में उपसर्ग, प्रत्यय या अन्य संयोजन द्वारा बनते हैं।
   - समास: "ग्रामदेवता"।
   - यौगिक शब्द: "महानता"।

   (ii) द्विगु समास में दो पद होते हैं - पूर्व पद और उत्तर पद। इसमें पूर्व पद संख्या, गुण या द्वैत को व्यक्त करता है, और उत्तर पद उसे विशेषता देता है। उदाहरण के तौर पर, "द्वादशपद" (12 पंख) शब्द में "द्वादश" पूर्व पद है जो संख्या को व्यक्त करता है, और "पद" उत्तर पद है जो चीज़ की पहचान बताता है।

   (iii) विग्रह: वहि + स्कृत
   प्रकार: यह तत्पुरुष समास है, जिसमें "वहि" (बाहर) और "स्कृत" (किया गया) मिलकर "वहिष्कृत" (बाहर किया गया) का अर्थ बनाते हैं।

   (iv)
   - विग्रह: वहि + स्कृत
   - प्रकार: यह तत्पुरुष समास है, जिसमें "वहि" (बाहर) और "स्कृत" (किया गया) मिलकर "वहिष्कृत" (बाहर किया गया) शब्द बनाते हैं।

   (v)
   - विग्रह: सिद्ध + अर्थ
   - भेद: यह तत्पुरुष समास है, जिसमें "सिद्ध" (पूंजी) और "अर्थ" (उद्देश्य) मिलकर "सिद्धार्थ" (सिद्ध उद्देश्य वाला) का अर्थ देते हैं।
6. 'मुहावरे' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए -
   (i) एड़ी-चोटी का जोर लगाना
   (ii) खरी-खोटी सुननी
   (iii) i. मुँह की खाना - जो व्यक्ति अनुचित कार्य करता है, उसे कभी-न-कभी मुँह की खानी पड़ती है।
   ii. आवाज़ उठाना - राजा राममोहन राय ने रूढ़ियों के विरुद्ध आवाज़ उठाई और उसमें वे सफल भी हुए।
   iii. दो से चार बनाना - कुछ लोग तो बिना मेहनत किए ही दो से चार बनाने में लगे रहते हैं।
   (iv) उसने अच्छी पेंटिंग को नकार दिया, यह तो वही बात हुई, बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।

SATISH SCIENCE ACADEMY

(v) मुहावरा: दिन दूना और रात चौगुना।
वाक्य: किसान की कड़ी मेहनत से उसकी फसल दिन दूना और रात चौगुना बढ़ी।

खंड ग - गद्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

7. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

मैं छोटा था, वह बड़े थे। मेरी उम्र नौ साल की थी, वह चौदह साल के थे। उन्हें मेरी तम्बीह और निगरानी का पूरा और जन्मसिद्ध अधिकार था और मेरी शालीनता इसी में थी कि उनके हुक्म को कानून समझूँ।

वह स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे। हरदम किताब खोले बैठे रहते और शायद दिमाग को आराम देने के लिए कभी कॉपी पर, किताब के हाशियों पर, चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तस्वीरें बनाया करते थे। कभी-कभी एक ही नाम या शब्द या वाक्य दस-बार लिख डालते। कभी एक शेर को बार-बार सुंदर अक्षरों में नकल करते। कभी ऐसे शब्द-रचना करते, जिसमें न कोई अर्थ होता, न कोई सामंजस्य। मसलन एक बार उनकी कॉपी पर मैंने यह इबारत देखी- स्पेशल, अमीना, भाइयों-भाइयों, दरअसल, भाई-भाई। राधेश्याम, श्रीयुत, राधेश्याम, एक घण्टे तक; इसके बाद एक आदमी का चेहरा बना हुआ था। मैंने बहुत चेष्टा की कि इस पहेली का कोई अर्थ निकालूँ, लेकिन असफल रहा और उनसे पूछने का साहस न हुआ। वह नौवीं जमात में थे, मैं पाँचवी में। उनकी रचनाओं को समझना मेरे लिए छोटा मुँह बड़ी बात थी।

(i) **(ख)** पाँच
व्याख्या:
पाँच

(ii) **(ख)** विकल्प (iii)
व्याख्या:
अध्ययनशील

(iii) **(ग)** विकल्प (iv)
व्याख्या:
सभी विकल्प सही हैं

(iv) **(ग)** बड़े भाई साहब की रचनाओं को
व्याख्या:
बड़े भाई साहब की रचनाओं को

(v) **(ग)** पाठ-बड़े भाई साहब, लेखक-प्रेमचंद
व्याख्या:
पाठ-बड़े भाई साहब, लेखक-प्रेमचंद

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:

(i) 26 जनवरी, 1931 को समय और स्थान बता कर सभा का आयोजन
- पुलिस कमिश्नर द्वारा सभा आयोजित न करने और कर्मचारियों के भाग लेने पर दोषी समझे जाने का नोटिस
- जबकि कौंसिल की तरफ से चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराने और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ने के लिए सर्वसाधारण को सभा में उपस्थिति का नोटिस
- प्रशासन को ऐसी खुली चुनौती पहले कभी नहीं दी गई।
- ऐसी सभा और सर्वसाधारण की इतनी उपस्थिति भी पहले कभी नहीं हुई।

(ii) यह झेन संस्कृति की देन है। इससे मानसिक रोग का उपचार होता है, मानसिक सन्तुलन कायम होता है तथा भूत-भविष्य की चिंता नहीं रहती। टी-सेरेमनी का शांतिपूर्ण वातावरण सभी प्रकार के तनावों से मुक्ति प्रदान कर वर्तमान में जीना सिखाता है।

(iii) कर्नल को वजीर अली के किस्से रॉबिनहुड की याद दिलाते थे क्योंकि वह भी मजबूरों का हमदर्द था और अंग्रेजी सत्ता को समाप्त करना चाहता था | वजीर अली के बहादुरी और वफादारी के किस्से मशहूर थे | उसकी दिलेरी और बहादुरी का उदाहरण है कि उसने कंपनी के वकील को उसके घर जा कर मार डाला था |

(iv) तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र पाठ के संदर्भ में संगीतकार जयकिशन और शैलेंद्र के बीच एक महत्वपूर्ण असहमति थी। जयकिशन को 'श्री 420' के एक गीत के अंतरे की एक पंक्ति "दस दिशाएँ" पर आपत्ति थी, उनका तर्क था कि दर्शक "चार दिशाएँ" को ही समझ सकते हैं, "दस दिशाएँ" उनके लिए अव्यावहारिक हो सकती हैं। इसके विपरीत, शैलेंद्र का तर्क था कि दर्शकों की रुचियों के बहाने से उथलेपन को थोपना कलाकार का कर्तव्य नहीं है। वे मानते थे कि एक कलाकार को दर्शकों की रुचियों का परिष्कार करना चाहिए, न कि उनकी अपेक्षाओं को सीमित करना चाहिए। शैलेंद्र का यह दृष्टिकोण दर्शकों को उच्च गुणवत्ता और गहराई का अनुभव देने की दिशा में था, जबकि जयकिशन की चिंता व्यावहारिकता और व्यावसायिक दृष्टिकोण से जुड़ी थी।

खंड ग - काव्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।

BATISH SCIENCE ACADEMY

तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

(i) **(घ)** इच्छित मार्ग
व्याख्या:
इच्छित मार्ग

(ii) **(ख)** डटकर मुकाबला करना चाहिए
व्याख्या:
डटकर मुकाबला करना चाहिए

(iii) **(ग)** दूसरों को सफलता दिलाकर स्वयं सफलता प्राप्त करना
व्याख्या:
दूसरों को सफलता दिलाकर स्वयं सफलता प्राप्त करना।

(iv) **(घ)** भेद-भाव न बढ़ने देने के लिए
व्याख्या:
भेद-भाव न बढ़ने देने के लिए

(v) **(ख)** दूसरों की उन्नति में सहायक होते हुए अपनी उन्नति करना
व्याख्या:
दूसरों की उन्नति में सहायक होते हुए अपनी उन्नति करना

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:

(i) इस पद में कवयित्री मीरा भगवान श्री कृष्ण के भक्त - प्रेम का वर्णन करते हुए कहती हैं कि आप अपने भक्तों के सभी प्रकार के दुखों को हरने वाले हैं अर्थात दुखों का नाश करने वाले हैं। मीरा अपने प्रभु की झूठी प्रशंसा भी करती है, प्यार भी करती हैं और अवसर आने पर डांटने से भी नहीं डरती। श्रीकृष्ण की शक्तिओं व सामर्थ्य का गुणगान भी करती हैं और उनको उनके कर्तव्य भी याद दिलाती हैं।

(ii) कविता के अनुसार प्रस्तुत पंक्ति पल-पल परिवर्तित प्रकृति-वेश के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि पर्वतीय प्रदेशों में वर्षा ऋतु में हर क्षण वातावरण में बदलाव आता है। कभी धूप निकली होती है और अचानक से घने बादल उमड़ने लगते हैं। इन सब परिवर्तनों से ऐसा प्रतीत होता है कि मानो प्रकृति हर क्षण अपना वेश बदल रही हो।

(iii) कर चले हम फ़िदा' गीत उर्दू के प्रसिद्ध शायर कैफ़ी आज़मी की रचना है। यह गीत वर्ष 1962 में 'भारत-चीन युद्ध' की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर बनने वाली फिल्म 'हकीकत' के लिए लिखा गया था। यह फिल्म हिमालय क्षेत्र में भारत-चीन युद्ध का चित्रांकन है | इस गीत के माध्यम से देशवासियों में अपनी मातृभूमि के प्रति बलिदान की भावना तथा आज़ादी की रक्षा के लिए प्राणों की परवाह न करने का भाव, सैनिकों के संबोधन के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। उनके अनुसार ज़िंदा रहने के अवसर तो बहुत बार आते हैं , पर देश के लिए अपनी कुर्बानी देने का मौका बहुत कम मिलता है | यह गीत वर्तमान समय में भी देशभक्ति के प्रति उत्साह पैदा करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

(iv) आत्मत्राण कविता में चारों ओर से दुःखों से घिरने पर भी कवि अपने आप से अपेक्षा करता है कि उसका विश्वास ईश्वर पर से खत्म न हो। वो चाहता है कि ईश्वर उसे सामर्थ्य दें ताकि वो अपने दुःखों से छुटकारा पा सके और प्रभु पर संदेह न करे।

खंड ग - संचयन (पूरक पाठ्यपुस्तक)

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए:

(i) महंत का चरित्र उत्तम नहीं था। वह नाम मात्र का ही महंत था। अंदर से वह ढोंगी और धन का लालची था। उसकी नज़र हरिहर काका की ज़मीन पर थी। उनके घर की आपसी कलह का वह लाभ उठाना चाहता था। जब हरिहर काका ने ज़मीन ठाकुरबाड़ी के नाम लिखने से मना कर दिया तो वह उनका अपहरण करवा लेता है। यह घटना महंत के चारित्रिक पतन की ओर संकेत करती है। ठाकुरबाड़ी जैसी संस्थाओं में इस तरह की घटना होना धार्मिक उन्माद फैलाना है। महंत जैसे लोभी और ढोंगी आज ठाकुरबाड़ी जैसी संस्थाओं का नेतृत्व कर रहे हैं। इस प्रकार की संस्था का उद्देश्य समाज में केवल अंधविश्वास और पाखंड फैलाना है।

(ii) लेखक गुरुदयाल और उनके साथियों को स्कूल जाना पसंद नहीं था पर स्काउट परेड वाला दिन उन्हें बहुत अच्छा लगता था। उस समय परेड करते समय उनके अंदर आत्मविश्वास और जोश भर जाता था। उन्हें लगता था कि वे सचमुच फौजी जवान बन गए हैं।
हमें विद्यालय जाना बहुत पसंद है क्योंकि वहाँ हमारा सर्वांगीण विकास होता है। पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद, व्यायाम, संगीत, नृत्य आदि अनेक गतिविधियाँ हमारे विद्यालय में होती हैं जो हमारे सम्पूर्ण विकास में सहायक हैं इसलिए हमें किसी दिन की अपेक्षा प्रतिदिन विद्यालय जाना पसंद है।

(iii) इफ्फन की दादी असीम प्रेम की सजीव प्रतिमा थीं। वे बच्चों को डाँटने की बजाय उन्हें अपने पास बिठाकर बड़े ही प्यार से समझाती थीं इसके विपरीत टोपी की दादी का स्वभाव सख्त था और वे अनुशासनप्रिय भी थी। वे टोपी को डाँटती और फटकारती रहती थीं इसलिए टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात कही। इफ़्फ़न ने दादी न बदलने का यह करना बताया कि उसकी दादी उसके अब्बू की अम्मा भी हैं और उसके अब्बू इस बात के लिए राजी नहीं होंगे।
इफ़्फ़न के द्वारा दादी न बदलने के कारण सही थे। इफ़्फ़न को अपनी दादी से लगाव था और वह उनके स्थान पर टोपी की अनुशासनप्रिय दादी नहीं चाहता था।

खंड घ - रचनात्मक लेखन

12. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लिखिये:

(i) **जल ही जीवन है**

SATISH SCIENCE ACADEMY

पृथ्वी पर रहने वाले हर एक प्राणी के लिए जल जरूरी और क्योंकि इस पर मनुष्यों की निर्भरता भी बहुत अधिक है, इसलिए जल एक अहम संसाधन है। जल का उपयोग रोजमर्रा के कामों से लेकर कृषि और विभिन्न उद्योगों में किया जाता है। जल के बिना ज्यादा समय तक धरती पर जीवन संभव ही नहीं है, इसलिए जल को जीवन बताया गया है।

जल को जीवन का आधार माना गया है, क्योंकि जल के बिना जीवन संभव नहीं है फिर चाहे वो मनुष्य जीव हो या पेड़-पौधे आदि। जल का उपयोग खाने में, पीने के पानी के अलावा हमारे दैनिक कार्य, कृषि, विभिन्न उद्योगों के लिए किया जाता है। इसलिए जल मानव जीवन के उन मूल्यवान संसाधनों में से एक है, जो हमें प्रकृति ने भेंट दिया है। जल एक ओर हमारे जीवन का हिस्सा है और हमारे शरीर के लिए आवश्यक है, वहीं अगर साफ पानी का सेवन न किया जाए तो यह आपको गंभीर रूप से बीमार भी कर सकता है। और आश्चर्य की बात है कि पृथ्वी पर 71 प्रतिशत पानी मौजूद होने के बाद भी केवल 1 प्रतिशत ही पानी पीने लायक है। इसलिए जल संरक्षण बहुत जरूरी है।

ऐसे कई देश हैं जहां सूखे की समस्या तेजी से बढ़ती जा रही है और लोगों को पीने का पानी तक मुश्किल से मिल पाता है। ऐसे में कृषि के लिए पानी उपयुक्त नहीं होता और लोग भूख और प्यास जैसी एक बड़ी समस्या से जूझ रहे है। इस समस्या को नियंत्रित करने के लिए हमें पानी का उपयोग केवल उतना ही करना चाहिए जितना उपयुक्त हो।

हमें ध्यान रखना होगा कि हम जब नल का उपयोग करे तो थोड़ा ही पानी खोले। कोशिश करें कि घर के दैनिक कामों के लिए पानी पुनः उपयोग कर लें। बारिश के पानी को जमा कर के पेड़ पौधों को पानी देने में इस्तेमाल करें। जो पानी गंदा हो या पीने लायक न हो उसका उपयोग घर की साफ-सफाई में कर सकते हैं। हमे आने वाली पीढ़ी के लिए इन प्राकृतिक संसाधनों को बचाना होगा और इसके लिए जरूरी है कि इन संसाधनों का उपयोग हम समझदारी से करें। पानी का मूल्य हम सब को जानना चाहिए ताकि हम उसे बचाकर आने वाली पीढ़ी के लिए उपलब्ध करा सकते हैं। जल ही जीवन है और हम सब को जीने के लिए इसकी अति आवश्यकता है। इसलिए इसका संरक्षण करना हम सब को आना चाहिए।

(ii) महापुरुषों ने कहा है, "समय बहुत मूल्यवान है। एक बार निकल जाने पर यह कभी वापस नहीं आता।" वास्तव में, समय ही जीवन है। इसकी गति को रोकना असंभव है। संसार में अनेक उदाहरण हैं, जो समय की महत्ता को प्रमाणित करते हैं। जिसने समय के मूल्य को नहीं पहचाना, वह हमेशा पछताया है। इसके महत्त्व को पहचानकर इसका सदुपयोग करने वाले व्यक्तियों ने अपने जीवन में लगातार सफलता प्राप्त की। जो व्यक्ति समय मिलने पर भी अपने जीवन में कुछ नहीं कर पाते, वे जीवन में असफल रहते हैं।

जो विद्यार्थी पूरे वर्ष पढ़ाई नहीं करते, वे फेल होने पर पछताते हैं। तब यह उक्ति कि 'अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत' चरितार्थ होती है। विद्यार्थी को समय का मूल्य पहचानते हुए हर पल का सदुपयोग करना चाहिए, क्योंकि जो समय को नष्ट करता है, एक दिन समय उसे नष्ट कर देता है। महान् पुरुषों ने समय का सदुपयोग किया और अपने जीवन में सफल हुए। स्वामी दयानंद, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, मदर टेरेसा आदि इसके ज्वलंत प्रमाण हैं। अतः हमें समय की महत्ता को समझते हुए इसका सदुपयोग करना चाहिए।

(iii) **नारी सशक्तिकरण: सुदृढ़ समाज का आधार**

नारी सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण मुद्दा है जो समाज के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर महिलाओं को अधिक शक्ति और स्वतंत्रता प्रदान करने की प्रक्रिया है। इसके माध्यम से महिलाएं स्वीकार करती हैं कि उनके समाज में भी अपनी भूमिका और योगदान का महत्व है।

नारी सशक्तिकरण का उद्देश्य महिलाओं को उनकी अधिकारों, स्वतंत्रता और अवसरों के बारे में जागरूक करना है। यह महिलाओं को आत्म-निर्भर बनाता है, जो उन्हें अपने जीवन के निर्धारण में सक्षम बनाता है।

इस राह में कई बाधाएँ हैं, जैसे जातिवाद, शैक्षिक असमानता, और सामाजिक रूप से परिवार और समाज में महिलाओं के अधिकारों की कमी। इन बाधाओं को दूर करने के लिए, समाज को एक जागरूक और सजीव सांस्कृतिक परिवर्तन की आवश्यकता है, जो महिलाओं के अधिकारों को समझने और समर्थन करने में मदद करेगा।

सुझाव के रूप में, समाज को महिलाओं के लिए उचित शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए, उन्हें आर्थिक स्वायत्तता प्राप्त करने के लिए योजनाएं बनानी चाहिए, और उन्हें बड़े पड़ोसी समुदायों में भी भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इसके रूप में, महिलाओं को उनके पूर्ण पोटेंशियल की ओर एक सशक्त समाज के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन बनाने में मदद मिलेगी।

13. परीक्षा भवन,
उत्तर प्रदेश
दिनांक 13 मार्च, 20XX
सेवा में,
श्रीमान प्रबंधक महोदय,
केनरा बैंक मोदीनगर,
उत्तर प्रदेश।
विषय कंप्यूटर प्रशिक्षण संस्था खोलने के लिए ऋण प्राप्ति हेतु।
मान्यवर,
मैं आपको विनम्र रूप से सूचित करना चाहता हूँ कि मैं पिछले कुछ वर्षों से एक विद्यालय में कंप्यूटर शिक्षक के रूप में कार्यरत हूँ। मैंने उत्तर प्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय से एम.सी.ए. किया हुआ है। कंप्यूटर प्रशिक्षण के क्षेत्र में अत्यधिक रुचि होने के कारण मैंने इस क्षेत्र को अपने व्यवसाय के रूप में चुना है। मै अपने जनपद में जन कल्याण हेतु एक निजी कंप्यूटर प्रशिक्षण संस्थान खोलने चाहता हूँ। मेरा उद्देश्य इस संस्था के द्वारा इस जनपद के और जनपद के आसपास के क्षेत्रों को कंप्यूटर प्रशिक्षण देना है। जिससे सभी को फायदा होगा । लेकिन इसमें एक समस्या भी है। मेरे पास इतनी पूंजी नहीं है कि मैं उस पूंजी को लगाकर एक निजी कंप्यूटर प्रशिक्षण संस्था खोल सकूं । इसलिए मैं आपके पास आया हूँ। मुझे कुछ ऋण की आवश्यकता है । इसलिए कृपया करके मुझे ऋण देने का प्रयास करें ।
सधन्यवाद।
भवदीय

SATISH SCIENCE ACADEMY

करण

अथवा

परीक्षा भवन
के.वी. विदयालय
शाहदरा
12 मई 20XX
स्वास्थ्य अधिकारी
नगर निगम
शाहदरा
विषय - बस्ती में आवारा कुत्तों समस्या के निवारण हेतु पत्र।
मान्यवर,
मैं शाहदरा में सीमापुरी मोहल्ले का निवासी हूँ तथा आवारा कुत्तों के कारण हो रही समस्याओं से आपको अवगत करना चाहता हूँ।
हमारी बस्ती में आए दिन कोई-न-कोई व्यक्ति आवारा कुत्तों का शिकार हो रहा है तथा उन्होंने हमारी बस्ती की एक बहची की काटकर हत्या भी कर दी है। वे हर रोज हमारी बस्ती में कूड़ा फैला देते हैं तथा उनका मल-मूत्र नई बीमारियों का कारण बन रहा है।
अतः मेरा आपसे यह अनुरोध है कि जल्द-से-जल्द इन आवारा कुत्तो हेतु नए आवास कार्य आरम्भ किया जाये तथा इनसे प्रभावित लोगों को चिकित्सा हेतु धन-राशि प्रदान की जाए।
सधन्यवाद
भवदीय,
सौरभ

14.

सर्वोदय विद्यालय
दिल्ली कैंट, दिल्ली

सूचना
आपदा प्रबंधन कार्यशाला के आयोजन हेतु

विद्यालय परिषद द्वारा आप सभी कक्षा छठी से बारहवीं तक के विद्यार्थियों को यह सूचित किया जाता है कि आपदा प्रबंधन की ओर से हमारे विद्यालय में एक कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें विषय से संबंधित जानकारियाँ साझा की जाएगी। अतः आप सभी विद्यार्थियों से यह अनुरोध है कि इस कार्यशाला में उपस्थित रहकर इसकी जानकारी लें और इस आयोजन को सफल बनाएँ। कार्यक्रम इस प्रकार हैं-

- **दिनांक** - 18 मई 2023
- **समय** - शाम 5 बजे
- **स्थान** - विद्यालय परिसर

कार्यक्रम में प्रवेश पाने के लिए पास की जरूरत होगी। पास पाने के लिए मुख्य अध्यापक से संपर्क करें।
प्रमुख छात्र
मानव

अथवा

मैजेस्टिक क्लब, कोलकाता

सूचना
मेगा चैरिटी शो

30 मार्च, 2019

जनसाधारण को सूचित किया जाता है कि क्लब द्वारा 02 अप्रैल 2019 को क्लब के ओडीटोरियम में एक मेगा चैरिटी शो के आयोजन का निर्णय लिया गया है। इसका आयोजन प्रातः 10 बजे होगा। यह गली में रहने वाले लोगों के लिए है। जो इस शो में हिस्सा लेना चाहते हैं, वे अपने सुझावों के साथ अपना नाम 5 दिनों के अंदर सचिव को दे सकते हैं।
(सचिव)

बिकाऊ है

पुराना शीशम की लकड़ी से बना टिकाऊ फर्नीचर जैसे-कुर्सियाँ, मेज, डबल बैड, ड्रेसिग टेबल इत्यादि बिकाऊ हैं।
जो भी व्यक्ति लेने के इच्छुक हों संपर्क करें।

मकान न. 2/338
पालम दिल्ली
मोबाइल न. 86329XXXX

15.

अथवा

निःशुल्क दंत जाँच शिविर

SATISH SCIENCE ACADEMY

5 अक्टूबर, 2023
अ.ब.स. क्लब आपके क्षेत्र में निःशुल्क दंत जाँच शिविर का आयोजन कर रहे है। अनुभवी चिकित्सकों द्वारा दाँतों की जाँच होगी, साथ ही निःशुल्क दवाइयों का भी वितरण होगा। यह अवसर न देखें और अपनी दाँतों की देखभाल कराएँ।

शिविर का दिनांक: 10/10/2023 से 12/10/2023
समय: प्रातः 9 बजे से दोपहर 3 बजे तक

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।
क्लब अधिकारी
हर्ष

16. From: pawan@mycbseguide.com
To: transport@delhi.gov.in
CC ...
BCC ...
विषय - अपनी कॉलोनी तक नए बस मार्ग हेतु।
महोदय,
मैं उत्तर-पश्चिम दिल्ली के विकासपुरी, डी ब्लॉक का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र में बड़ी जनसंख्या निवास करती है, जिसमें अधिकांश लोग दिल्ली के विभिन्न भागों में कार्यरत हैं। हमारी कॉलोनी से कोई बस नहीं चलती।
अतः आपसे अनुरोध है कि विकासपुरी डी-ब्लॉक तक एक नया बस मार्ग (बस रूट) आरंभ करने की कृपा करें। मुझे विश्वास है कि आप इसे गंभीरता से लेते हुए संबंधित अधिकारी को इसके लिए उचित निर्देश देंगे।
पवन

अथवा

संगत का असर

मैं आज आपको अपने जीवन का एक किस्सा सुनाना चाहता हूँ, जिसने मेरी जिंदगी में बहुत सारे बदलाव किए। बचपन से ही मुझे मेरे माता-पिता ने अच्छे संस्कार दिए है और उनके दिए गए संस्कारों ने मुझे प्रभावित भी किया। लेकिन बाहर पढ़ने जाने के बाद मेरे जीवन में कुछ नए दोस्तों का आगमन हुआ। उनमें कुछ बुराइयाँ थीं, लेकिन मैंने सोचा कि इसका मुझपर कोई असर नहीं पड़ेगा। लेकिन साथ रहते-रहते धीरे-धीरे मुझपर भी उनका कुछ असर पड़ने लगा। मैं भी अपने सारे अच्छे संस्कारों को छोड़कर उनके बताए रास्तों पर चलने लगा और जल्द ही बुरे कामों का परिणाम भी मेरे सामने आ गया। मैं अपनी अगली परीक्षा में फेल हो गया और तब जाकर मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ कि मैं किस रास्ते पर चल पड़ा था। सच ही कहा गया है कि बुरी संगत का बुरा असर ही होता है।

SATISH SCIENCE ACADEMY